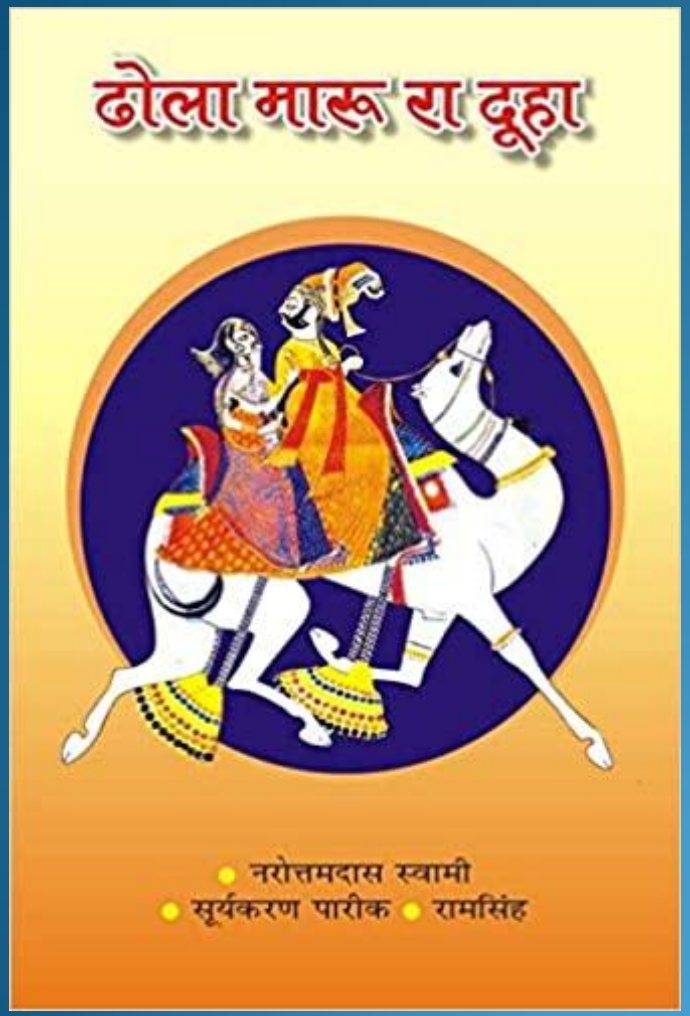


# ढोला मारू रा दूहा

## (दोहा 131 से 135 )

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

# मारवणी का संदेश - 131

**पंथी, एक सँदेसड़उ, लग ढोलइ पैहच्याइ।**

**जोवन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ।।१३१**

- **भाव-**

  हे पथिक, सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं—यौवन क्षीरसागर हो रहा है, तुम आकर रत्न तो निकालो।

# मारवणी का संदेश - 132

**पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ।**

**जंघा केळिनि फळि गई, स्वात जु, बरसउ आइ।।१३२**

**भाव-**

हे पथिक, सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं—जंघा कदली फल गई है, हे प्रियतम, तुम आकर स्वातिजल बरसो।

# मारवणी का संदेश - 133

**पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ।**

**सावज संबळ तोड़स्यइ, बैसासणइ न जाइ।।१३३**

**भाव-**

हे पथिक, सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं—स्वाद पाथेय (भोजन) से ही मिटता है, विश्वास से नहीं।

# मारवणी का संदेश - 134

**पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ।**

**जोबन जायइ प्राहुणउ, वेमइरउ घर आय।।१३४**

**भाव-**

हे पथिक, सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं—यौवनरूपी अतिथि (घर आकर निराश) लौटा जा रहा है। जल्दी घर आओ।

# मारवणी का संदेश - 135

**पही, भमंतउ जउ मिलइ, कहे अम्हीणी बत्त।**

**धण कँणयररी कंब ज्यउँ, सूकी तोइ सुरत्त।।१३५**

**भाव-**

हे पथिक यदि घूमते हुए तुम ढोला से मिलो तो हमारी यह बात कहना—प्रेयसी तुम्हारी सुरत (याद) में कनेर की छड़ी के समान सूख गई है।